ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-4* May- 2021
Innovation The Research Concept

स्वतंत्रता पूर्व कोटा रियासत में "स्काउट" आंदोलन

"Scout" Movement in The Pre-Independence Kota Princely State

Paper Submission: 15/05/2021, Date of Acceptance:24/05/2021, Date of Publication: 25/05/2021

ऊषा व्यास
एसोसिएट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
गवर्नमेंट कॉलेज,
बूंदी, राजस्थान, भारत

Abstract सारांश

मानव सेवा के लिए समर्पित स्काउटिंग आंदोलन स्वतंत्रता के पूर्व ही भारत में प्रारंभ हो चुका हो चुका था । आजादी के पूर्व के भारत में ब्रिटिश भारत और देशी रियासतें पृथक पृथक इकाइयां थी ।देसी रियासतों को शिक्षा व्यवस्था ही नहीं वरन सहशैक्षणिक गतिविधियों में भी ब्रिटिश भारत से संबद्धता लेनी होती थी। राजपूताना की कोटा रियासत स्काउटिंग आंदोलन प्रारंभ करने वाली अग्रणी रियासतों में से थी। 1921 ईस्वी से ही रियासत में स्काउटिंग की गतिविधियां प्रारंभ हो गई थी ।स्काउटिंग आंदोलन के लिए ब्रिटिश भारत के संयुक्त प्रांत के स्काउट संगठन से संबद्धता प्राप्त की गई ताकि कोटा के स्काउट्स को प्रशिक्षण प्राप्त हो सके एवं उनकी उपलब्धियों पर उन्हें प्रमाण पत्र आदि भी दिया जा सके । प्रस्तुत लेख में राज्य के विभिन्न जिलों में किन-किन विद्यालयों में यह आंदोलन पनपा, कितने विद्यार्थी इसमें सम्मिलित हुए एवं राज्य के स्काउट्स की क्या उपलब्धियां रही आदि पर प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत शोध पत्र की सामग्री कोटा अभिलेखागार से प्राप्त मौलिक स्रोतों पर आधारित है।

The scouting movement dedicated to human service had already started in India before independence. In India before independence, British India and the princely states were separate units. Not only the education system of the native princely states but also i co-educational activitiesHad to be affiliated with.British Indian institutesThe princely state of Kota in Rajputana was one of the leading princely states to start the Scouting movement. Scouting activities were started in the princely state from 1921 AD. For the Scouting movement, affiliation was obtained from the Scout organization of United Provinces of British India so that the scouts of Kota could get training and they were given certificates etc. on their achievements. the present article, in which schools this movement flourished in different districts of the state, how many students participated in it and what were the achievements of the scouts of the state, etc. have been highlighted. The content of the present research paper is based on the original sources obtained from the Kota Archives.

मुख्य शब्दः स्काउट आंदोलन, कोटा रियासत, राजपूताना, संयुक्त प्रांत,हर्बर्ट हाईस्कूल, वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल, बी. डी .बट्टा, शिक्षा निदेशक, कोटा महाराव?.

प्रस्तावना

स्काउट्स एवं गाइड्स एक स्वयंसेवी, गैर राजनीतिक एवं शैक्षिक आंदोलन है, जो हर एक नौजवान को मानवता की सेवा करने का अवसर प्रदान करता है। सेवा का यह अवसर बिना किसी तरह की रंग, नस्ल एवं जाति के भेदभाव के प्रदान किया जाता है। नौजवान विश्व मानवता की सेवा के इस कार्य को पूर्ण क्षमता से निष्पादित कर सके इसके लिए आवश्यक है कि स्वयं उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो। नव युवकों के संपूर्ण शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास के उद्देश्य से ब्रिटिश नागरिक बेडेन पावेल ने 1908 में स्काउट एवं गाइड आंदोलन की नींव रखी। अपनी महती उद्देश्यों के कारण पावेल द्वारा संस्थापित यह आंदोलन शीघ्र ही पूरी दुनिया में लोकप्रिय हो गया। [1एक] वर्ष पश्चात ही 1909 ई में भारत में भी इस आंदोलन की शुरुआत हुई। प्रारंभिक कुछ वर्षों में इस संगठन में केवल एंग्लो इंडियन एवं विदेशी बालकों को ही सम्मिलित किया जाता था। भारतीय नवयुवकों के लिए स्काउट आंदोलन में प्रवेश का मार्ग 1913 ई. के पश्चात ही सुगम हुआ और इसका श्रेय जाता है पंडित मदन मोहन मालवीय, न्यायाधीश विवियन बोस, एनी बेसेंट एवं उनके सरीखे अन्य महानुभावों को। शीघ्र ही स्काउट एवं गाइड आंदोलन केवल ब्रिटिश भारत में ही नहीं वरन देशी रियासतों में भी पनपने लगा।

अध्ययन का उद्देश्य

राजपूताना की कोटा रियासत में आजादी के पूर्व आधुनिकीकरण के लिए प्रयास प्रारंभ किए गए थे। आधुनिकीकरण के विभिन्न माध्यमों में शिक्षा सबसे सशक्त माध्यम है ।लेकिन कोई भी शिक्षा प्रणाली केवल किताबी ज्ञान से संपूर्ण नहीं होती है ।सहशैक्षणिक गतिविधियां जैसे खेलकूद ,सांस्कृतिक गतिविधियां एवं स्काउटिंग आंदोलन आदि शिक्षा व्यवस्था का एक अभिन्न अंग होती है , तभी विद्यार्थी के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास संभव हो पाता है। प्रस्तुत शोध लेख का उद्देश्य स्वतंत्रता पूर्व की कोटा रियासत में इन सहशैक्षणिक गतिविधियों में से एक स्काउट आंदोलन के प्रारंभ एवं विकास को रेखांकित करना है।

विषय विस्तार

राजपूताना के राज्यों में कोटा पहला राज्य था जिसने इस आंदोलन के शैक्षणिक महत्व और इसकी विशाल संभाव्यताओं को समझा। अतः कोटा रियासत के तत्कालीन शिक्षा निदेशक की सलाह पर कोटा के ब्रांच स्कूल के प्रथम अध्यापक पंडित उमाशंकर को प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए आगरा भेजा गया ताकि कोटा राज्य में भी स्काउटिंग प्रारंभ की जा सके। पंडित उमा शंकर ने वहां 15 दिन का प्रशिक्षण प्राप्त किया और वहां से उनके प्रशिक्षण प्राप्त करके आने के पश्चात राज्य में पहला स्काउट दल 18 जनवरी 1921 से प्रारंभ हुआ।1 स्काउटिंग के लिए आवश्यक उपकरण खरीदने हेतु 300 रुपए भी सरकार द्वारा स्वीकृत किए गए। प्रारंभ में 40 लड़कों को स्काउटिंग कक्षा में सम्मिलित किया गया परंतु बाद में 20 लड़कों को ही इसमें रखा गया। प्रशिक्षण के उपरान्त ये छात्र स्काउट के द्वितीय कक्षा टेस्ट के लिए पूर्णतया तैयार थे अतः आगरा स्थित बाय्ज स्काउट के मुख्य आयुक्त और निदेशक के यहां राज्य के इस दल को पंजीकृत करने के लिए आवेदन कर दिया गया था।[2] इसी वर्ष इंग्लैंड की बायज स्काउट एसोसिएशन ने भारत स्थित विभिन्न स्काउट केंद्रों के स्काउट मास्टर्स को प्रशिक्षित करने के लिए एक विशेषज्ञ कैप्टन गिडने को भारत भेजने का निश्चय किया। कोटा स्थित पोलिटिकल एजेंट चाहते थे कि कोटा रियासत भी गिडने की भारत यात्रा में जो संभावित व्यय होने वाली राशि थी उसमें सहभागिता करें ताकि कोटा राज्य को भी गिडने के अनुभव और ज्ञान से लाभ उठाने का मौका प्राप्त हो जाए।[3] परंतु कोटा राज्य में स्काउटिंग अभी प्रारंभ ही हुई थी और प्रारंभिक चरण में होने के कारण इसने राज्य के छात्रों और अध्यापकों में विशेष उत्साह पैदा नहीं किया था। अतः राज्य के सलाहकारों का यह मानना था कि "इसमे संदेह नहीं है कि "यह अपनी असीमित उपयोगिता और विशाल संभावनाओं के चलते निसंदेह विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण, बुद्धि विकास और शारीरिक विकास में सहयोगी है। साथ ही यह शिक्षा को एक व्यवहारिक स्वरूप- जिसका कि अभी तक, हमारी शिक्षा प्रणाली में अभाव था -प्रदान करता है। परंतु अभी हम यह निश्चित तौर पर निर्णय करने की स्थिति में नहीं है कि स्काउटिंग को छात्रों एवं उनके अभिभावकों द्वारा कितना पसंद किया जाएगा अथवा कितनी संख्या में शिक्षक स्काउटिंग के कार्य को इसकी सही भावना के रूप में बढ़ाने के लिए आगे आएंगे जो कि इसकी सफलता के लिए आवश्यक है"। अतः इस आधार पर कि जब राज्य में स्काउटिंग आंदोलन कुछ जड़ पकड़ लेगा तभी राज्य एक स्काउट विशेषज्ञ की सलाह और ज्ञान से लाभ उठाने की स्थिति में होगा, कोटा रियासत ने गिडने की भारत यात्रा खर्च में सहयोग करने से इंकार कर दिया।[4]

कोटा राज्य में स्काउटिंग को प्रारंभ हुए दो वर्ष पूर्ण हो चुके थे, उसके उपरांत भी राज्य के स्काउट दल का पंजीयन नहीं हुआ था। आगरा और अवध के बॉयज स्काउट एसोसिएशन से राज्य स्काउट दल को पंजीकृत करने का कई बार अनुरोध किया गया था परंतु अनेक बार स्मरण पत्र भेजने के बावजूद इस संस्था ने कोई प्रत्युत्तर नहीं दिया था। राज्य के स्काउट्स के प्रशिक्षण, परीक्षण के लिए और उन्हें आवश्यक बैजेज आदि प्रदान करने के लिए यह आवश्यक था कि इसका ब्रिटिश भारत स्थित किसी स्काउट संस्था से संबंध हो, अन्यथा इस बात की पूरी संभावना थी कि इस आंदोलन में छात्रों की रुचि ही खत्म हो जाए और यह अति उपयोगी आंदोलन असामयिक मृत्यु का शिकार हो जाए। परंतु इस सरकारी संस्था द्वारा कोटा राज्य के अनुरोध का कोई प्रत्युत्तर नहीं देने पर यह युक्तिसंगत समझा गया कि संयुक्त प्रांत की बॉयज स्काउट्स एसोसिएशन की सेवा समिति, जो राज्य के स्काउट दल को मान्यता देने को तैयार थी, उससे ही राज्य के स्काउट दल का पंजीयन करवा लिया जाएं। यह संस्था संयुक्त प्रांत सरकार द्वारा संयुक्त प्रांत में सरकारी और बोर्ड के स्कूलों में स्काउट्स के प्रशिक्षण और पंजीयन के लिए सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त संस्था थी।[5]

कोटा नगर के हर्बर्ट हाई स्कूल के अतिरिक्त राज्य में बारां के वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल में भी स्काउटिंग प्रारंभ हो चुकी थी। इस वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल में स्काउटिंग की गतिविधियां सफलतापूर्वक चलाई जा रही थी। इस स्कूल के 28 छात्रों ने टेंडरफुट टेस्ट उत्तीर्ण कर लिया था। इसमें से 18 लड़के द्वितीय कक्षा स्काउट टेस्ट के लिए उपयुक्त हो चुके थे। वर्ष 1922 के अंत तक स्कूल में 40 स्काउट्स नामांकित हो चुके थे। स्काउट्स के कुछ छात्रों ने समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया था। स्काउट राधेलाल निम्न जाति के एक लड़के को बचाने के लिए कूद पड़ा और उस लड़के को जिसकी एक बांह टूट चुकी थी उसे अस्पताल ले गया। जातीय जड़ता से ग्रस्त समाज में सभी भेदभाव को भुलाकर स्काउट द्वारा यह कार्य करना निस्संदेह प्रसंशनीय है। एक दूसरे स्काउट कांता प्रसाद ने एक लड़के को नदी में डूबने से बचाया और एक 7 वर्ष के लड़के को कुएं से बाहर निकाला। एक अन्य स्काउट रामेश्वर प्रसाद ने जलते हुए घर में से लोगों को बाहर निकाल कर उनके जीवन और संपत्ति की रक्षा का उल्लेखनीय कार्य किया। इस विद्यालय में स्काउट्स को झंडे के संकेत देना, स्टॉफ ड्रिल, रस्सी से पुल बनाना और बांस स्क्रीन बनाना सिखाया जाता था। कोटा महाराव ने दिसंबर 1922 में जब इस विद्यालय का दौरा किया तो यहां की स्काउटिंग गतिविधियों की बहुत सराहना की।[6]

वर्ष 1923- 24 में कोटा के स्कूलों में स्काउटिंग आंदोलन असफल प्रतीत होने लगा था। शिक्षा निदेशक ने असफलता का कुछ दोष तो अभिभावकों की उदासीनता एवं उनके विरोध को दिया परंतु मुख्यतया इसके लिए शिक्षकों में उत्साह की कमी और आंदोलन के लिए सही भावना का अभाव बताया।[7] यह उचित समझा गया कि किसी एक शिक्षक को इसे पुर्नजीवित करने का कार्य सौंपा जाए। कोटा में हर्बर्ट हाई स्कूल में रसायन शास्त्र के प्रोफेसर बीडी बट्टा को स्काउटिंग को पुनर्जीवित करने का कार्य सौंपा गया।[8] लड़कों में बचत और मितव्ययिता को प्रोत्साहित करने के लिए स्काउट बचत बैंक खोला गया। इस दिशा में पहल नॉर्मल स्कूल, कोटा द्वारा की गई। वर्ष 1924-25 के बजट में बारां स्काउट अध्यापक के लिए आठ रुपए प्रतिमाह भत्ते की व्यवस्था की गई एवं स्काउटिंग उपकरणों को खरीदने के लिए कोटा के लोअर मिडिल स्कूल को 120 रुपए एवं हाई स्कूल बारां को 100 रूपए वार्षिक दिए गए।[9] राज्य में स्काउट प्रभारी हर्बर्ट कॉलेज के प्रोफेसर बी.डी. बट्टा को इलाहाबाद बॉयज स्काउट सेवा समिति के आयुक्त ने सहमति दे दी। बट्टा ने अपने कार्य को लगन पूर्वक करना प्रारंभ किया। उन्होंने दो स्काउट दल जिसमें क्रमशः 25 और 15 स्काउट्स थे, का गठन किया। यह सभी स्काउट्स दो टेंडर फुट टेस्ट में उत्तीर्ण हो गए। वर्ष में एक बार स्काउट्स को रात्रि शिविर लगाना पड़ता था । स्काउट्स के दो शिविर अभेड़ा और केशोरायपाटन में लगाए गए। यह शिविर बड़े उपयोगी सिद्ध हुए। एक स्काउट लाइब्रेरी और वाचनालय भी प्रारंभ किया गया। इस तरह से श्री बट्टा ने स्काउट आंदोलन को संगठित करने और आगे बढ़ाने के लिए बड़े परिश्रम से कार्य किया। उनके प्रयासों की सरकार से भी संस्तुति की गई। उनके ही प्रयासों का परिणाम था कि अगले वर्ष राज्य में 7 स्काउट दल के अंतर्गत 137 स्काउट्स थे। इसी वर्ष 21 से 23 दिसंबर 1926 को संयुक्त प्रांत की बॉयज स्काउट्स एसोसिएशन की सेवा समिति के मुख्य संगठन आयुक्त श्री राम वाजपेई कोटा पधारे। उनकी उपस्थिति में राज्य में स्काउट्स की एक रैली निकाली गई। श्री राम वाजपेई ने स्काउट आंदोलन के उद्देश्य समझाएं और स्काउट आंदोलन को लोकप्रिय बनाने और प्रचारित करने के लिए स्थानीय संगठन का सुझाव दिया। राज्य में एक स्थानीय संगठन बनाया गया।[10] कोटा महाराव ने राज्य के स्काउट आंदोलन का संरक्षक बनने की सहर्ष सहमति दे दी। इसी वर्ष बनारस में आयोजित स्काउट मेले में कोटा के दो अध्यापकों, श्री बट्टा और मोहनलाल के साथ राज्य के 10 स्काउट्स ने भाग लिया।[11] राज्य के जिलों में स्काउटिंग को प्रचारित करने के लिए कोटा मुख्यालय में 1927-28 में एक स्काउट मास्टर्स ट्रेनिंग कैंप आयोजित किया गया। जिलों के विद्यालयों के 7 प्रधानाध्यापक एवं 8 सहायक अध्यापक इस कैंप में सम्मिलित हुए एवं कैंप में प्रशिक्षण लेने के पश्चात उन्होंने अपने-अपने स्कूलों में स्काउटिंग प्रारंभ की।[12] अब राज्य में 16 स्काउट दल हो गए थे, इनमें 15 पेट्रोल एवं 314 स्काउट्स हो गए थे। स्पष्ट था कि राज्य में स्काउट आंदोलन लोकप्रिय होता जा रहा था।

एक ओर जहां जिले के स्कूलों में यह आंदोलन प्रगति कर रहा था वहीं बारां हाई स्कूल में जहां यह आंदोलन अन्य विद्यालयों से बहुत पहले ही प्रारंभ हो गया था ,वहां इस विषय में

प्रगति बहुत कम हुई थी। शिक्षा निदेशक ने इसका कारण विद्यालय के अध्यापकों द्वारा समुचित दिशानिर्देशों एवं स्वस्थ प्रेरणा का अभाव माना जबकि बारां प्रधानाध्यापक ने इसका कारण आंदोलन का अपनी प्रारंभिक एवं मूल उद्देश्य से भटकना बताया।[13] धीरे-धीरे कोटा नगर के विद्यालयों में भी यही स्थिति उत्पन्न होने लगी। कर्जन वायली मेमोरियल हॉल, कोटा में इससे संबंधित एक सभा बुलाई गई एवं इस सभा में शिक्षा निदेशक ने आंदोलन के उद्देश्यों के प्रति उत्साह पैदा करने का प्रयास किया। परंतु शिक्षा निदेशक ने स्वयं इस तथ्य को स्वीकार करते हुए खेद व्यक्त किया कि व्यावहारिक रूप में कोटा और बारां में आंदोलन कमजोर पड़ रहा था।

जिलों के स्कूलों में यह अवश्य अभी भी विशेष सार्थक था। [14] वहां के स्थानीय मेलों और हैजे की महामारी में स्काउट के लड़कों ने सेवा का प्रशंसनीय कार्य किया। कुछ विद्यालय निरीक्षक भी इसमें विशेष रूचि ले रहे थे। इनमें निरीक्षक गोकुल प्रसाद का नाम विशेष उल्लेखनीय था।[15]

1935-36 में राज्य की विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में स्काउट रोवर 655 और वुल्फ कब 277 थे। मार्च 1935 में जैन मेले में एवं कोटा के वार्षिक दशहरे मेले में स्काउट ने प्रशंसनीय कार्य किया। 1935-36 में राज्य के 93 स्काउट्स और स्काउट्स मास्टरों के दल ने अखिल भारतीय स्काउट मेले दयालबाग, आगरा में भाग लिया। [16] 1937 तक राज्य में स्काउट कमिश्नर बी.डी. बट्टा ही रहे । बट्टा के नेतृत्व में स्काउट दल ने इस वर्ष लखनऊ में आयोजित स्काउट मेले में भाग लिया। इस मेले में कोटा कैम्प को अत्यंत स्वच्छ पाया गया और स्काउट इंस्पेक्टर ने कोटा दल को द्वितीय पुरस्कार के रूप में रेड रिबन प्रदान किया।[17] स्काउट्स ने कोटा के दशहरे मेले एवं बारां के डोल मेले में जनता की सेवा का प्रशंसनीय कार्य किया । 1937-38 में शिक्षा निदेशक ही स्काउट कमिश्नर थे। इस वर्ष दशहरे अवकाश के दौरान 11 से 20 अक्टूबर 1937 को कोटा के दशहरा मैदान में एक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया इसमें 26 अध्यापकों ने भाग लिया। इस शिविर में श्री बट्टा एवं पंडित उमा शंकर द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। शिविर में एक सम्मान समारोह आयोजित किया गया जिसमें महाराव, पोलिटिकल एजेंट एवं शहर के अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।[18] अगले वर्ष 1938-39 में कोटा के छत्रपुरा मैदान पर एक प्रशिक्षण शिविर 20 नवंबर से 1 दिसंबर तक आयोजित हुआ, इस प्रशिक्षण शिविर में 24 शिक्षकों ने भाग लिया एवं सम्मान समारोह उम्मेद इन्फेंट्री, कोटा के मेजर के. बी .दल्बी ने पूरा किया।[19]

निष्कर्ष

निष्कर्षत: राज्य में स्काउट आंदोलन प्रगति कर रहा था। कोटा और बारां के स्कूलों के अतिरिक्त यह जिलों के स्कूलों में भी सार्थक प्रगति कर रहा था। राज्य में स्काउट संख्या में बढ़ोतरी हुई थी। 1940 तक कोटा राज्य में 116 स्काउट पेट्रोल, 704 स्काउट्स एवं 347 वुल्फ कब थे। ये स्काउट्स स्थानीय मेलों एवं आपदाओं के समय जनता की प्रशंसनीय सेवा करतेथे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1- एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट,1920 -21
1. वही
2. फाइल नंबर 4ध्9 ,नवंबर 1921, महकमा खास, शिक्षा
3. वही
4. एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट, 1920- 21
5. वही
6. फाइल नंबर 44ध्9, नवंबर 1921, महकमा खास, शिक्षा
7. वही
8. एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट, 1924 -25
9. एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट, 1926,
10. वही
11. एडमिशन रिपोर्ट,1926-27
12. एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट,1929
13. वही
14. एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट, 1935-36
15. एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट, 1935
16. एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट, 1936
17. एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट, 1937
18. एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट 1940